Q(1) पाठ्यक्रम में भाषा से आप क्या समझते हैं? इसकी आवश्यकता एवं लाभ लिखिए।

Ans:- पाठ्यक्रम में भाषा (Language across Curriculum) :-
पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा का अर्थ है कि भाषा की शिक्षा न केवल एक विषय में होती है, बल्कि भाषा का शिक्षण विद्यालय के प्रत्येक विषय में और पाठ्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि में होता है। अर्थात भाषा का शिक्षण विद्यालय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के माध्यम से होता है। परिणामस्वरूप हमें विद्यालय में भाषा शिक्षा और भाषा अधिगम के बारे में इस बात पर बल दिया जाता है कि भाषा का शिक्षण और अधिगम केवल उस भाषा के विषय तक सीमित नहीं है। इसका संबंध विद्यालय के सभी विषयों से है। क्योंकि भाषा अन्य विषयों के सीखने के माध्यम के रूप में कार्य करती है। उदाहरण के लिए, यदि अंग्रेजी भाषा को विद्यालय में एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है, लेकिन सामाजिक विज्ञान भी यदि अंग्रेजी माध्यम में हो तो, वह भी अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तक के रूप में कार्य करता है। इसी प्रकार गणित, विज्ञान आदि विषयों के माध्यम से भी भाषा का शिक्षण होता है। यही कारण होता है कि जो बच्चे अंग्रेजी भाषा को एक माध्यम के रूप में चुनते हैं उनकी अंग्रेजी भाषा उन बच्चों की अपेक्षा अधिक अच्छी होती है, जिनका माध्यम हिन्दी होता है।

पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा के आधार
(Base of Concept of Language in Curriculum)
पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है-
(1) भाषा इसके उद्देश्यपूर्ण प्रयोग के माध्यम से विकसित होती है।
(2) सीखने में प्रायः बातचीत, लिखना, शोपिंग और गतिविधि शामिल होती है।
(3) अधिगम प्रायः बोलने या लिखने से भी होता है।
(4) बच्चों के मानसिक विकास में भाषा का मुख्य योगदान है।
(5) भाषा सीखी गई विषय वस्तु की अभिव्यक्ति, इसके विकास और एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता बनने के लिए एक माध्यम है।

इसलिए पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा का उद्देश्य स्कूल की प्रत्येक गतिविधि और प्रत्येक विद्यालय विषय के माध्यम से प्रत्येक बच्चों की भाषा का विकास करना है।

भाषा का प्रयोग मुख्य रूप से मानव की आठ प्रकार की गतिविधियों में होता है :-

(1) सुनना - मौखिक भाषा को समझना ।
(2) बोलना - अर्थपूर्ण ध्वनियों को बोलना ।
(3) पढ़ना - लिखित सामग्री को पढ़ना ।
(4) लिखना - लिखित सामग्री का निर्माण करना / सुगम वार्तालाप ।
(5) अनुमान लगाना - दृश्यात्मक प्रतीकों / सूचना पर ध्यान देना / समझना ।
(6) शेपिंग - अभिव्यक्ति के दृश्यात्मक साधनों का प्रयोग करना ।
(7) देखना - शारीरिक गतिविधियों पर ध्यान देना ।
(8) गति करना - पूरे शरीर का प्रयोग आत्म अभिव्यक्ति के लिए करना ।

पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा के अनुसार भाषा और अधिगम व भाषा और चिन्तन का गहरा संबंध है । इसलिए बच्चे की वर्तमान मानसिक और भाषायी योग्यताओं को और अधिक विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में भाषा की अवधारणा सक्रिय, रचनात्मक और स्वतंत्र अधिगम पर शिक्षण की अपेक्षा अधिक बल देती है ।

पाठ्यक्रम भाषा की आवश्यकता (Need of Language Curriculum)

(1) विषय से संबंधित उचित सम्प्रत्यय को समझाने एवं शैलियाँ बनाने के लिए ।
(2) भाषा के माध्यम से अधिगम के लिए विभिन्न नीतियाँ बनाने के लिए ।
(3) ज्ञान पर मेटा - दृष्टिकोण का विकास करने के लिए ।
(4) उचित अधिगम करने के लिए ।
(5) मध्यस्थता कौशल का विकास करने के लिए ।
(6) संज्ञानात्मक शैक्षणिक भाषा का विकास करने के लिए ।

पाठ्यक्रम भाषा के लाभ :- (Advantages of Curriculum Language)

(1) यह सुनिश्चित करना कि विद्यालय का संगठनात्मक ढाँचा ऐसा हो जो कि भाषा संबंधी बनाई गई विधियों एवं नियोजन प्रक्रियाओं में सुधार किया जा सके ।
(2) सभी अध्यापकों को इस योग्य बनाना की भाषा से संबंधित समस्याओं का समाधान करना एवं भाषा के लिए अपना उद्देश्य निर्धारित करना ।
(3) विद्यार्थियों की मातृभाषा में पढ़ाना ताकि कक्षा - कक्ष में शिक्षण अधिगम प्रभावी बन सके ।
(4) सुगम एवं प्रभावपूर्ण अधिगम बनाना ।
(5) ज्ञान अर्जन प्रक्रिया को सरल व सुगम बनाना ।

कक्षा - कक्ष में आने वाले नये विद्यार्थियों के साथ समायोजन की समस्या को कम करना ताकि अधिगम अधिक प्रभावी हो सके ।

Q(2.) बहुभाषावाद से आप क्या समझते हैं? "बहुभाषावाद एक संसाधन एवं नीति के रूप में" कथन की चर्चा करें।

Ans:- बहुभाषिता का अर्थ (Meaning of Multilingualism):- हमलोग आस-पास यह देखते हैं कि बच्चे भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रयोग करते हैं अर्थात वे बच्चे सीखने के दौरान एक से अधिक भाषाओं में कुशलता का विस्तार करते हैं, उनमें सीखने की प्रक्रिया के साथ ही रचनात्मक और सामाजिक सहिष्णुता जैसे गुणों का बेहतरीन विकास होता है। दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण रखते हैं, बल्कि शैक्षिक स्तर पर भी ज्यादा रचनात्मक होते हैं साथ ही उनमें ज्यादा सामाजिकता और सहिष्णुता भी पायी जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि बहुभाषिकता का संज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा और सकारात्मक संबंध है।

दरअसल बहुभाषिकता भाषा की एक सम्पन्न स्थिति है। अतः इसके संदर्भ में हुए अध्ययनों ने यह साबित कर दिया है कि बहुभाषिकता व्यक्तियों के क्षमताओं का निर्माण ही नहीं करती है, बल्कि वह भारत के भाषा परिदृश्य का विशेष लक्षण भी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बहुभाषिक व्यक्ति एकभाषिक व्यक्ति से ज्यादा व्यवहारिक होता है।

किसी बच्चे का बहुभाषिक होना सीखने का बेहतरीन साधन है। इसकी व्याख्या इस प्रकार दी जा सकती है कि जो बच्चे सीखने के दौरान एक से अधिक भाषाओं में कुशलता का विस्तार करते हैं उनमें सीखने की प्रक्रिया के साथ ही रचनात्मक और सामाजिक सहिष्णुता जैसे गुणों का बेहतरीन विकास होता है। दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण रखते हैं, बल्कि शैक्षिक स्तर भी ज्यादा रचनात्मक होते हैं। साथ ही उनमें ज्यादा सामाजिकता और सहिष्णुता भी पाई जाती है।

बहुभाषावाद के प्रकार (Types of Multilingualism)

(1) उच्च वर्ग की भाषा - बालक को उच्च वर्ग की भाषा सिखाने के लिए औपचारिक वातावरण की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की भाषा विद्यालयों में सिखाई जाती है।

(2) आस-पड़ोस की भाषा - बालक प्राकृतिक वातावरण में रहकर यह भाषा सीखता है। जब बालक अपने पास-पड़ोस में लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा को देखता और सुनता है तो वह स्वयं इस भाषा का अनुश्रवण करने लगता है।

बहुभाषावाद संसाधनों एवं नीति के रूप में:- भारत एक बहुभाषी देश है - यह एक

जानी मानी बात है। 1971 की जनगणना जिसे इस मामले में सबसे ज्यादा आधिकारिक माना जा सकता है, ने हमारे देश में कुल 1652 भाषाओं की पहचान की जो पाँच विभिन्न भाषा-परिवारों के तहत आते हैं। प्रिंट मिडिया में 87 से ज्यादा भाषायें प्रयुक्त होती है, रेडियो में 71 भाषायें और प्रशासन के स्तर पर 13 विभिन्न भाषायें प्रयुक्त होती है।

लेकिन बड़े दुःख की बात है कि केवल 47 भाषायें ही स्कूलों में पठन-पाठन के माध्यम के रूप में प्रयोग की जाती है। हम आशा करते हैं कि इस आधार पत्र के बाद ज्यादा से ज्यादा मातृभाषायें स्कूलों में माध्यम के रूप में प्रयुक्त होगीं। बहुभाषिकतावाद पर हुए अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि हमारी शिक्षा व्यवस्था को इसे टालने के बजाए बनाये रखने और प्रोत्साहित करने का भरपूर प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र को देखा जाना चाहिए जिसे कई शिक्षा आयोगों ने लागू करने की सिफारिश की। यह दुखद बात है कि देश भर में कहीं इस सूत्र को सही रूप में लागू करने के प्रयास नहीं दिखाई देते हैं।

बहुभाषिकतावाद को बढ़ावा देने की जरूरत :-

भारत जैसे देश में सामाजिक सौहार्दता तभी संभव है जब लोग एक दूसरे की भाषा और संस्कृति को सम्मान दें। इस प्रकार का सम्मान ज्ञान के बिना संभव नहीं है। भाषा को अर्जित करने में बहुआयामी संस्कृति एवं भाषायी भिन्नता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस कार्य को करने में एक अध्यापक कक्षा-कक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जिससे बहुभाषायी कक्षा-कक्ष के विद्यार्थियों को भाषा को अर्जित करने में आसानी रहती है।

एक बहुआयामी संस्कृति समाज ही सांस्कृतिक रूप से विद्यार्थियों को भाषा का ज्ञान अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालयों में अध्ययनरत सभी बच्चों को बहु संस्कृति एवं भाषा की जानकारी हो उनको संस्कृति जागरूकता एवं भाषा अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य करती है। जो शिक्षक कक्षा कक्ष में मिली जुली संस्कृति में विश्वास रखते हैं वो विद्यार्थियों की संस्कृति, उनकी भावनाओं और आध्यात्मिक जरूरतों को भलीभांति समझते हैं और उनको अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अन्त: में वे बहुत सी नीतियों को प्रयोग में लाते हैं ताकि भिन्न संस्कृति वातावरण से आने वाले बच्चों में आपसी विश्वास कायम हो सके।

Q(3.) भाषा क्या है? भाषा सीखना एवं सामान्य कक्षा-कक्ष के माध्यम से सीखना से आप क्या समझते हैं? सामान्य कक्षा-कक्ष भाषा से आप क्या समझते हैं?

Ans:- भाषा का अर्थ - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने भावों और विचारों को दूसरों के साथ बाँटना चाहता है। इसलिए वह समुदाय में रहता है। दूसरे शब्दों में भाषा लोगों की एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने में सहायता करती है। विचारों का आदान-प्रदान बोलकर, लिखकर, गाकर आदि किसी भी प्रकार से किया जा सकता है। भाषा के कारण ही मनुष्य ने नए-नए आयाम स्थापित किये हैं और एक नई सामाजिक संरचना का निर्माण किया है।

मनुष्य के मानव मस्तिष्क में जो भी विचार व भाव उत्पन्न होते हैं उनकी अभिव्यक्ति के लिए जिस साधन का प्रयोग करते हैं, उसे भाषा कहते हैं। स्वीट के अनुसार - "भाषा स्वर ध्वनि के द्वारा विचारों का अभिव्यक्ति करण है।"

सामान्य कक्षा-कक्ष भाषा :- (General Classroom Language) - कक्षा में अध्यापक बच्चों के साथ सम्प्रेषण के लिए भाषा का प्रयोग करता है जिससे बच्चे आसानी से समझ व सीख सकें। कक्षा में अध्यापक को उसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिस भाषा का प्रयोग बच्चे करते हैं। निम्न प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जा सकता है:-

(1) शाब्दिक भाषा - हम सभी शाब्दिक भाषा का ही प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की भाषा में विचारों का आदान-प्रदान लिखित या मौखिक रूप में हो सकती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था में बालक मौखिक भाषा को सुनकर बोलना सीखता है। कक्षा में अध्यापक जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, यह निश्चित कर लेना चाहिए कि वह बच्चों के समझ में आ रही है या नहीं।

(2) अशाब्दिक भाषा - अशाब्दिक भाषा को मौन भाषा भी कहते हैं। इस भाषा में शरीर के अंगों द्वारा संकेतों का प्रयोग किया जाता है। इस भाषा में न बोलकर, न सुनकर और न ही पढ़कर विचारों को व्यक्त किया जाता है, बल्कि संकेतों के द्वारा किया जाता है। अशाब्दिक भाषा में निम्न का प्रयोग किया जा सकता है।

(a) चेहरे के हाव-भाव - इसमें चेहरे के हाव-भावों से विचार स्पष्ट होते हैं जैसे कि वह दुखी है या खुशी है अथवा गुस्से में है। जब शिक्षक किसी छात्र की अनुक्रिया पर मुस्कुराते हैं तो छात्र समझ जाता है शिक्षक उसकी अनुक्रिया से प्रसन्न है।

(b) वाणी संकेत - छात्रों की अनुक्रिया के लिए हाँ या नहीं में सिर हिलाना और उनकी बातों पर जोर देने के लिए हाथ से इशारा करना।

(c) चित्र – अध्यापक चित्रों व कला के माध्यम से भी सम्प्रेषण करता है। चित्रों के माध्यम से बच्चे आसानी से व जल्दी सीखते हैं।

अशाब्दिक सम्प्रेषण के माध्यम से अध्यापक छात्रों को बहुत सी सूचनायें देता है। छात्र इस प्रकार के सम्प्रेषण को जल्दी समझ जाते हैं।

भाषा को सीखना (Language learning) – प्रारंभ में बालक अपनी मातृभाषा को बोलना घर में सीखता है। उसका शब्द भंडार सीमित होता है, वह सरल शब्दों का प्रयोग करता है। इसके बाद स्कूल में भाषा उचित रूप से सीखता है। भाषा के चार कौशल होते हैं जो कि क्रमशः हैं - श्रवण कौशल, वाचन कौशल, पठन कौशल व लेखन कौशल। भाषा पर पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन चारों कौशलों में पूर्ण रूप से निपुण होना चाहिए।

भाषा सीखने के साधन :– शिक्षा शास्त्रियों ने भाषा सीखने के कई साधनों पर प्रकाश डाला है इनमें से सर्वाधिक प्रचलित साधन निम्न हैं :-

① अनुकरण (Imitation) – बालकों द्वारा भाषा सीखने का अनुकरण एक प्रमुख साधन है। अकसर बालक परिवार के सदस्यों (माता, पिता, भाई, दादा-दादी) तथा साथियों को जैसा बोलते सुनता है, वैसा ही बोलने का अनुकरण करता है और कुछ प्रयासों के बाद वह वैसे ही बोलना प्रारंभ कर देता है। इकीनर (1957) ने भाषा सीखने की इस विधि पर अधिक बल डाला है। इन्होंने भाषा सीखने के एक विशेष मॉडल का भी निर्माण किया है जिसे अनुकरण तथा संशोधन मॉडल की संज्ञा दी गई है।

② खेल – बालक अपनी अवस्था के अनुसार तरह-तरह के खेल खेलता है। इन खेलों से भाषा के अक्षरों को लिखना, पढ़ना तथा बोलना सीख लेता है।

③ कहानी सुनना (Listening to Stories) – बालक वयस्कों, जैसे - दादा-दादी, चाचा-चाची, माता-पिता तथा अन्य से कहानियाँ सुनना पसंद करते हैं। यदि इन कहानियों में नैतिक तथा शैक्षिक तथ्य हों तो उनसे भाषा विकास अधिक तीव्रता से होता है।

④ वार्तालाप तथा बातचीत (Talking) – अपने साथियों एवं परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करके भी बालक भाषा को सीखते हैं।

⑤ प्रश्नोत्तर – बालक स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं। वे अपने परिवार के सदस्यों, शिक्षकों, तथा साथियों से तरह-तरह के प्रश्न करते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर पाकर वे वस्तु का अर्थ समझते हैं साथ ही साथ उसमें शब्दों को बोलने, लिखने तथा पढ़ने की प्रवृत्ति प्रोत्साहित होती है।

Q(4) विषय शिक्षक एवं भाषा शिक्षक का बच्चों की भाषा के विकास में क्या योगदान है?

Ans :- भाषा विकास में विषय शिक्षक की भूमिका :- भाषा का बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा एक ऐसी शक्ति होती है जो बालक के दृष्टिकोण का विकास करती है। स्कूलों में बालक की भाषा का विकास करने की जिम्मेदारी अध्यापकों की होती है इसलिए अध्यापक को भाषा के विकास के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(1) भाषा और गतिविधि - (Language & Activity) - बच्चों की भाषा का गहरा संबंध उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों व गतिविधियों से है। बचपन में भाषा और गतिविधियाँ साथ-साथ चलती है। अनुभव और गतिविधियाँ शब्दों की आवश्यकता पैदा करती है। जब कोई शब्द समाप्त होता है तो शब्द ही उस अनुभव को दोबारा दोहराने के लिए काम आते है। शब्दों के माध्यम से बच्चे वस्तुओं के साथ संबंध स्थापित करते है। शब्दों और गतिविधियों का यह संबंध शिक्षकों पर एक विशेष जिम्मेदारी डालता है। एक शिक्षक का कार्य है कि वह बच्चों के लिए स्कूल में इस प्रकार का वातावरण तैयार करे जिसमें वह भाषा को वास्तविक जीवन के अनुभवों और वस्तुओं के साथ जोड़ सके।

(2) वस्तुओं की व्याख्या करना (Explaining Things) - बच्चे किसी घटना या वस्तु की व्याख्या करने के लिए भाषा का प्रयोग करते है। जैसे यदि आप तीन वर्ष के एक बालक से पूछे कि वर्षा कैसे होती है? तो बालक बतायेगा कि आकाश बादलों से भरा हुआ था, पहले थोड़ी बूँदे गिरी फिर तेज वर्षा होने लगी और फिर कुछ नजर नहीं आया। इस घटना का वर्णन एक बालक क्रमबद्ध तरीके से करता है। कहानियों की रचना भाषा के इसी प्रयोग के आधार पर होती है।

(3) जीवन को प्रस्तुत करना (Reflecting Life) - बच्चे बड़ों की ही तरह भाषा का प्रयोग भूतकाल की घटनाओं को प्रस्तुत करने के लिए करते है। शब्दों के माध्यम से उन घटनाओं और वस्तुओं को समझा जा सकता है जो वर्तमान में हमारे सामने मौजूद नहीं है। जब बच्चा किसी वस्तु से डरता है तो वह अनेक बार इसके बारे में बताता है। वह शब्दों के माध्यम से अपने संवेगों को व्यक्त करता है।

(4) खेलना (Playing) - तीन वर्ष की अवस्था वाले बालक खेलों के माध्यम से सीखते है। वे विभिन्न आवाजों में शब्दों को बोलते है, वे अक्सर शब्दों को तोड़-मरोड़ कर मजाकिया अंदाज में बोलते है। वे ऐसी कविताओं को जल्दी सीखते है, जिनमें शब्दों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है। शब्दों के साथ खेलना सृजनात्मकता और कुर्ज

को जन्म देता है।

⑤ पूछताछ एवं तर्क देना (Inquiring and Reasoning) – बच्चों के जीवन में ऐसी समस्यायें आती हैं जो उन्हें हल करनी होती हैं। कुछ समस्याओं का हल बच्चे आसानी से कर लेते हैं जबकि कुछ का हल वे नहीं कर पाते हैं। उदाहरण – बस अचानक क्यों रुक जाती है? या सर्दियों में ठण्डे पानी से नहाना क्यों पसंद नहीं है? इन प्रश्नों का उत्तर बालक आसानी से दे सकते हैं।

कुछ समस्यायें ऐसी होती हैं जिनको बालक आसानी से हल नहीं कर सकता। जैसे – वर्षा क्यों होती है? इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर वह आसानी से नहीं दे सकता। लेकिन इस प्रकार का प्रश्न बालक को तर्क करने का अवसर उपलब्ध कराते हैं चाहे उत्तर सही नहीं हो। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि बालक भाषा का प्रयोग तर्क करने के लिए करता है।

भाषा शिक्षक (Language Teacher)

एक भाषा शिक्षक बच्चों के भाषा संबंधित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक विद्यालय में भाषा के विकास से संबंधित उद्देश्यों को पूरा करने के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व एक भाषा शिक्षक के ही होते हैं। एक भाषा शिक्षक यह दायित्व अन्य शिक्षकों की सहायता से हासिल करते हैं। अतः उसे इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए समय-समय पर विभिन्न शिक्षकों एवं प्राचार्य के सहयोग की आवश्यकता पड़ती रहती है।

एक भाषा शिक्षक के सामान्य दायित्व :-

① शैक्षणिक एवं प्रशासनिक साथियों से संबंध स्थापित करना, अपने साथियों की समय-समय पर शैक्षणिक गतिविधियों में सहायता करना।
② एक विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में एकता लाना।
③ भाषा से संबंधित व्यवहारिक एवं प्रशासनिक कर्तव्य निभाना।
④ बच्चों के अनुसार भाषा शिक्षण की नीतियों का निर्माण एवं लागू करना।
⑤ विद्यालय में बच्चों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा से संबंधित नीतियों में भाग लेना।

एक भाषा शिक्षक के रूप में दायित्व :-

① बच्चों को उनके अनुकूल भाषा का शिक्षण करना।
② भाषा शिक्षण को पाठ्यक्रम की आवश्यकतानुसार करना।
③ बच्चों के विषय अधिगम में सहभागिता को बढ़ाना।
④ बच्चों के लिए पाठ योजना एवं अधिगम के संसाधनों का निर्णय लेना।
⑤ बच्चों के अधिगम का आँकलन करना।

Q(5) कक्षा - कक्ष में प्रश्न एवं विचार विमर्श विधि से आप क्या समझते ? इसकी क्या भूमिका है ? व्याख्या करें ।

Ans :- प्रश्न विधि (Questioning)

प्रश्न विधि एक ऐसी कला है जो प्राचीन काल से ही शिक्षा देने के लिए प्रयोग में लायी जा रही है । जिस समय मुद्रण कला का आविष्कार नहीं हुआ था तब गुरु अपने शिष्यों को विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से ही शिक्षा दिया करते थे । आज भी जबकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपकरणों का प्रयोग हो रहा है, प्रश्न कला का महत्व कम नहीं हुआ है । बल्कि कक्षा अंत: क्रिया की दृष्टि से और भी ज्यादा हो गया है । कक्षा में विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जानकारी, छात्रों के ज्ञान व बोध का स्तर, उनकी विषय के प्रति रुचि, प्राप्त ज्ञान का स्तर, शिक्षण विधि की सफलता तथा अपने अध्यापन की प्रभावशीलता आदि की जानकारी प्रश्नों के द्वारा ही प्राप्त की जाती है । वास्तव में प्रश्न कौशल अध्यापक के लिए एक ऐसा उत्तम साधन है जिसके द्वारा अध्यापक तथा छात्र में उचित अंत: क्रिया होती है । तथा छात्रों को पढ़ने के लिए तथा कक्षा में ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है । इस प्रकार से शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया प्रश्न पूछने की कला से संबंधित है । बोसिंग (Bossing) महोदय के अनुसार - " प्रश्न करने की कला का महत्व स्वीकारे बिना कोई भी शिक्षण विधि सफलतापूर्वक लागू नहीं की जा सकती है ।"

अत: एक शिक्षक को अन्य कौशलों की तरह प्रश्न पूछने के कौशल में दक्ष होना आवश्यक है । शिक्षण प्रशिक्षण से इस कौशल को शीघ्रतापूर्वक तथा आसानी से सीखा जा सकता है ।

विचार विमर्श विधि (Discussion Method)

सामूहिक चर्चा विधि को लोकतांत्रिक शिक्षण विधि कहा जाता है । शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इसका प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है । प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय में इसी शिक्षण विधि का प्रयोग होता था । यूनानी विद्वान अपने शिष्यों के साथ बातचीत करते हुए विभिन्न समस्याओं पर चर्चा, विचार-विमर्श किया करते थे ।

इस विधि में विचारों का आदान - प्रदान होता है और समस्या के लिए बहुमत से समाधान ज्ञात किया जाता है । सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है । इससे विद्यार्थी को स्वतंत्र चिंतन तथा अभिव्यक्ति करने का अवसर प्राप्त होता है ।

जॉनसन के अनुसार — " विचार विमर्श विशुद्ध रूप में सामाजिक कार्य है "

शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है।

श्रवण कौशल के उद्देश्य एवं महत्व :—

श्रवण कौशल का लक्ष्य है बच्चों में दूसरे की बातों को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालना क्योंकि बच्चे यदि शिक्षक अथवा किसी अन्य व्यक्ति की बात ध्यान से नहीं सुनेंगे तो वे श्रुत - सामग्री के अर्थ को ग्रहण नहीं कर पायेंगे। बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में श्रवण - कौशल का अत्यधिक महत्व है।

कथन कौशल (Speaking Skill)

जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से मुख के अवयवों की सहायता से उच्चारित भाषा का प्रयोग करते हुए विचारों को प्रकट करता है तो इसे कथन कौशल कहते हैं। मनुष्य कथन कौशल के द्वारा ही अपने दिन - प्रतिदिन के कार्य पूर्ण करता है और सुचारु रूप से कार्य, व्यापार तथा क्रियाकलाप पूरे करता है। कथन कौशल शिक्षण वह शिक्षण है जिसके द्वारा छात्रों को अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट भाषा में व्यक्त करने के योग्य बनाया जाता है।

मौखिक/कथन कौशल का महत्व :—

मानव जीवन की जितनी भी बुनियादी आवश्यकतायें, उनमें भावों व विचारों की अभिव्यक्ति भी एक अनिवार्यता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कथन कौशल की आवश्यकता पड़ती है। अतः विचारों एवं भावों को व्यक्त करने में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। कथन कौशल के प्रयोग से कुशल व्यक्ति अपनी वाणी से जादू जगा सकता है। लोकप्रिय नेताओं के भाषण इसकी बात का प्रमाण है। नेता अपने कथन कौशल के द्वारा ही जन - समुदाय को अपना बना लेता है तथा अपनी बातचीत द्वारा उन्हें, अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बालक जिस प्रकार से उच्चारण करता है उसी प्रकार लिखता है। अतः लेखन का विकास करने के लिए भी कथन कौशल का महत्व है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मौखिक कार्य ही भाषा शिक्षण का मुख्य आधार है। मौखिक भाषा या कथन कौशल के बिना पढ़ना व सीखना असंभव प्रतीत होता है। कथन कौशल के द्वारा ही शिक्षक शिक्षण कार्य कराता है और इसी अपनी समस्या को उनके सामने प्रस्तुत करता है।

कथन कौशल के विभिन्न साधन जैसे - प्रश्नोत्तर, चित्र-वर्णन, घटना वर्णन, नाटक, भाषण, समाचार वाचन एवं टेलीफोन वार्ता द्वारा कथन - कौशल में प्रवीणता अर्जित की जा सकती है।

Q(7) पठन कौशल एवं लेखन कौशल से आप क्या समझते हैं? इसका वर्णन करें।

Ans – पठन या वाचन कौशल (Reading Skill)

भाषाई कौशल में पठन अथवा वाचन कौशल का अपना महत्व है। वाचन एक कला है। इस कला का पठन से अभ्यास किया जाता है। अर्थग्रहण भाषा शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों में से एक है। सफल अभिव्यक्ति अर्थ ग्रहण पर ही आधारित है और अर्थ ग्रहण वाचन की शुद्धता एवं समझने की क्षमता पर निर्भर करता है। अतः भाषा शिक्षण के लिए पठन कौशल की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

पूर्ण रूप से हम कह सकते हैं कि लिखित सामग्री को पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को पठन या वाचन कहा जाता है। किन्तु यह क्रिया सिर्फ अर्थ ग्रहण पर ही समाप्त नहीं होती अर्थ ग्रहण के पश्चात उस पर अपना मत स्थिर कर उसके अनुसार ~~उसका~~ आचरण करने पर यह क्रिया सम्पन्न होती है। प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यार्थी शब्दों को पढ़ तो लेते हैं परन्तु उनका अर्थ ग्रहण नहीं कर पाते, इसको हम वाचन नहीं कह सकते। शब्द को पढ़कर उसका पूर्ण अर्थ ग्रहण करना ही वाचन कहलाता है। डॉ० उमा मंगल के अनुसार – "वास्तव में लिखित सामग्री को पढ़ते हुए अर्थ प्रकट करने की प्रक्रिया को पठन या वाचन कहते हैं।"

पठन कौशल का महत्व – वाचन योग्यता के अभाव में शिक्षा प्राप्ति संभव नहीं है क्योंकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वाचन की आवश्यकता पड़ती है। पठन कौशल के बिना शिक्षण अधूरा ही कहा जायेगा। पठन कौशल से छात्रों में विचार शक्ति उत्पन्न होती है और उन्हें साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। वाचन की प्रकृति के अनुसार उन्हें मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है – (1) सस्वर वाचन (2) मौन वाचन

(1) सस्वर वाचन :– इस वाचन में पाठक लिखित सामग्री या भावों को बोल-बोल कर पढ़ता है। सस्वर वाचन में वर्णों तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर बल दिया जाता है। यदि बच्चा शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं करेगा तो वह सही अर्थ को नहीं जान पायेगा।

(2) मौन वाचन :– सस्वर वाचन के बाद अगली अवस्था मौन वाचन है। इस वाचन में पाठक दृष्टि-विराम के माध्यम से मन ही मन वाचन करता है। मौन वाचन के अंतर्गत नेत्र जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं तथा मस्तिष्क जल्दी-जल्दी ग्रहण करता है। इसमें वाचन प्रक्रिया मन-ही-मन चलती है और होंठ नहीं हिलाने पड़ते।

लेखन कौशल (Writing Skill)

लेखन शब्द का अर्थ सामान्य अक्षर विन्यास से लेकर रचनात्मक लेखन के उच्च स्तरों तक व्याप्त है। वास्तव में लेखन मानव जाति के विचारों का अमर अभिलेख है।

अपने भावों व विचारों को लिख कर अभिव्यक्त करना लेखन कौशल या लेखन अभिव्यक्ति कहलाती है। साहित्य के स्थायित्व एवं समृद्धि का मुख्य आधार यह लिखित अभिव्यक्ति ही है। डॉ० उमा मंगल के शब्दों में - "सामान्य रूप से लिखकर विचारों को अभिव्यक्त करना लेखन-कौशल या लिखित अभिव्यक्ति कहा जाता है। लिपि का ज्ञान प्राप्त करने के लिये भाषा के लिखित रूप का प्रयोग करके व्यक्ति अपने भावों और विचारों को लेखन - कौशल के द्वारा स्थायित्व प्रदान करता है।"

लेखन कौशल की आवश्यकता एवं महत्व :-

भाषा शिक्षण में जितना भाषा के कथन का महत्व है उतना ही भाषा के लिखित रूप का महत्व होता है। भाषा पर पूर्ण अधिकार पाने के लिये कथन - कौशल को पूरी तरह से विकसित करने के लिए लिपि का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है अर्थात् लेखन कौशल भी विकसित होना आवश्यक है। लेखन कौशल के आवश्यकता एवं महत्व को कम नहीं आँका जा सकता है।

लेखन कौशल के विभिन्न सोपान :-

① अनुलेख - अनुलेख का अर्थ है किसी लेखन को ज्यों का त्यों अर्थात जैसा-वह लिखा है उसको वैसा ही लिखना। अनुलेख के लिए प्राय: मुद्रित कॉपियों का प्रयोग किया जाता है।

② श्रुतलेख - श्रुतलेख का अर्थ है - सुना हुआ लेख अर्थात श्रुतलेख का तात्पर्य सुनकर लिखना है। इसमें अध्यापक बोलता जाता है और छात्र अध्यापक द्वारा बोली गई सामग्री को सुनकर लिखते जाते हैं।

③ सुलेख - अध्यापक को प्रारंभ से ही विद्यार्थियों के अन्दर सुलेख की रुचि विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को सुलेख पुस्तक की सहायता लेनी चाहिए। इस पुस्तक में पंक्तियों में हल्का - हल्का लिखा होता है। बच्चे उसके ऊपर कलम फेरकर वैसा ही लिखने का प्रयास करते हैं। प्राचीनकाल से ही सुलेख की आदत पर विशेष बल दिया जाता है। सुलेख का अर्थ होता है - सुन्दर लेख, अर्थात सुलेख द्वारा विद्यार्थी की लिखावट सुडौल व सुन्दर बनती है।

④ श्यामपट्ट लेखन - लेखन कौशल में श्यामपट्ट का भी विशेष महत्व है। इससे विद्यार्थियों को वर्णों की पहचान करनी जल्दी आ जाती है।

Q(8.) पढ़ने की स्किमिंग एवं स्कैनिंग विधि क्या होती है? यह किताबों से संबंधी सूचना का सार निकालने में सहायक है? विस्तार से चर्चा करें।

Ans:- स्किमिंग एवं स्कैनिंग (Skimming and Scanning)

स्किमिंग एवं स्कैनिंग तीव्र गति से पढ़ने की तकनीकी हैजो किसी भी व्यक्ति को अधिक से अधिक अध्ययन सामग्री को शीघ्रता से अध्ययन करने में सहायता करती है। ये तकनीकी प्रक्रिया में तो एक जैसे ही होती है परन्तु इनके उद्देश्य अलग-अलग होते है।

स्किमिंग (Skimming) → मुख्य विचार एवं विषय सामग्री के सामान्य अध्ययन के उद्देश्य से तीव्र गति से पाठ पर नजर फेरने की विधि को स्किमिंग विधि कहा जाता है।

स्किमिंग विधि को अपनाने वाली स्थितियाँ :-

① पूर्व-अध्ययन - किसी अध्ययन विषय सामग्री को विस्तार से अध्ययन करने से पूर्व एक बार उस अध्ययन सामग्री का पूर्णतया नजर फेर लेनी चाहिए जिससे आगे चलकर उस विषय को समझने में आसानी होती है।

② समीक्षा - किसी अध्ययन विषय से संबंधी सामग्री का एक बार गहन अध्ययन करने के बाद उस विषय की सम्पूर्ण जानकारी को बनाये रखने के लिए बाद में यदि स्किमिंग विधि को प्रयोग में लाया जाता है तो उस जानकारी को याद रखने में सहायता मिलती है।

③ शीघ्र अध्ययन :- कई बार एक अध्ययनकर्ता के पास पर्याप्त समय की कमी के कारण अध्ययन सामग्री का अध्ययन स्किमिंग विधि के माध्यम से किया जाता है।

स्किमिंग विधि के लिए कुछ चरण

① प्रथम विषय का शीर्षक को पढ़े।
② विषय के परिचय को पढ़े।
③ प्रथम पैराग्राफ को विस्तार से पढ़ें।
④ यदि उपशीर्षक है तो उनका अध्ययन एवं विभिन्न उपशीर्षकों में संबंध समझें।
⑤ प्रत्येक अन्य पैराग्राफ की प्रथम पंक्ति का अध्ययन करें।
- अधिकतर मुख्य विचार पैराग्राफ की प्रथम पंक्ति में ही होता है।
- यदि लेखक का लिखने का प्रारूप प्रश्न से आरंभ होता है तो पढ़ने वाले को अंतिम पंक्तियाँ अवश्य पढ़नी चाहिए।
⑥ अंतिम पैरा अवश्य ही सम्पूर्ण एवं ध्यान से पढ़ना चाहिए।

स्कैनिंग (Scanning) :-

स्कैनिंग विधि द्वारा पढ़ने का यह तरीका ठीक वैसा ही है, जैसा कि आप फोन बुक में कोई नम्बर देखने के लिए करते हैं। इसमें आप जल्दी-जल्दी पेज पलटते हुए किसी शब्द, मुहावरे या जरूरी तथ्यों का अवलोकन करते हैं। स्कैनिंग का इस्तेमाल आप निम्नलिखित चीजों को पढ़ने के लिए कर सकते हैं।

- किताब की प्रस्तावना या भूमिका।
- चैप्टर का पहला और आखिरी पैराग्राफ।
- कोई महत्वपूर्ण चैप्टर स्किमिंग।

इस विधि का उपयोग न्यूज पेपर या मैगजीन पढ़ने के लिए किया जाता है। इस विधि में मुख्य बिन्दुओं पर सरसरी तौर पर नजर डाली जाती है और गैर-जरूरी चीजों को छोड़ दिया जाता है। जैसे- किसी पैराग्राफ या चैप्टर को अच्छी तरह पढ़ने से पहले मुख्य बिन्दुओं पर सरसरी तौर पर नजर डाली जाती है।

किसी पैराग्राफ को अच्छी तरह पढ़ने के बाद उसे एकबार फिर समझने के लिए मुख्य बिन्दुओं को दोबारा पढ़ा जाता है।

=

Q (9) स्कीमा सिद्धांत से आप क्या समझते हैं? इसकी विस्तार से चर्चा करें।

Ans:- स्कीमा सिद्धांत (Schema Theory) :- अंतिम 40 वर्षों में अनुसंधानकर्ताओं ने पढ़ने की प्रक्रिया (बौद्धिक क्रियाओं) एवं पढ़ने की विधि के शिक्षण के संबंध में अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने अपने शोध कार्य के आधार पर पढ़ने की क्रियाओं के अनुसार विभिन्न पढ़ने के प्रतिमानों का प्रतिपादन किया है।

प्रतिमानों की परिभाषा :- एक पढ़ने से संबंधित प्रतिमान एक चित्रात्मक प्रयास है जो यह दर्शाता है कि कैसे एक व्यक्ति एक शब्द, एक पद एवं पद बंद की रचना एवं पाठ को समझता है।

स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचना से है जो व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में सूचनाओं को संगठित तथा व्यवस्थित करने हेतु विद्यमान होती है। यह 'स्कीमा' दो प्रकार का होता है - पहला साधारण तथा

दूसरा जटिल। साधारण स्कीमा मोटरकार या खिलौने के 'स्कीमा' से समझा जा सकता है। इसी प्रकार अंतरिक्ष का निर्माण कैसहुआ का स्कीमा, जटिल स्कीमा का उदाहरण होगा।

पियाजे के अनुसार - बच्चे स्कीमा के संशोधित व समायोजित करने में दो प्रक्रियाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

① आत्मसातीकरण (Assimilation) – वह प्रक्रिया है जिसमें बालक नए ज्ञान को पूर्व ज्ञान योजनाओं में शामिल कर लेता है, अर्थात् बालक नए ज्ञान का आत्मसात अपने पुराने स्कीमा में कर लेता है।

② समायोजन (Accommodation) – वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें बालक नई सूचना के अनुसार समायोजन करता है अर्थात स्कीमा को वातावरण के अनुसार समायोजित कर लेता है। ज्यों ही बालक के सामने ऐसी परिस्थिति या समस्या आती है, जिसका उसे कभी अनुभव नहीं हुआ है, तो इससे उसमें एक तरह का संज्ञानात्मक असंतुलन उत्पन्न होता जाता है। जिसे दूर करने के लिए या उसमें संतुलन लाने के लिए बालक आत्मसातीकरण या समायोजन या दोनों प्रक्रियायें करना आरंभ कर देता है। इस प्रक्रिया को सामंजस्यीकरण कहते हैं।

इसे पियाजे ने बच्चे द्वारा एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचने की प्रक्रिया को समझाने हेतु प्रयुक्त किया है। पियाजे के अनुसार जब बालक विचारों में असंतुलन से संतुलन की ओर जाता है (सामंजस्यीकरण प्रक्रिया द्वारा), तो बालक में संज्ञानात्मक परिवर्तन आता है जो कि गुणात्मक होता है। उदाहरण के लिए अगर बच्चा यह मानता है कि पानी की मात्रा में परिवर्तन केवल इसलिए हो जाता है कि क्योंकि यह एक बड़े बर्तन से छोटे बर्तन में पानी डाल दिया गया है। अतः इस स्थिति में बालक असमंजस में होगा कि यह ज्यादा पानी कहाँ से आया? क्या वास्तव में पानी की ज्यादा मात्रा उपलब्ध है? बच्चे इस असमंजस को तभी भुलवा पाते हैं, जब उनके विचारों में उच्च क्षमता विकसित हो जाती है।

पियाजे का यह मानना था कि बच्चे ज्ञान के निर्माण में क्रियाशील रहते हैं इसके साथ उनका कहना था कि उनका संज्ञानात्मक विकास चार क्रमागत अवस्थाओं से होकर गुजरता है। प्रत्येक अवस्था आयु-विशेष में होती है तथा प्रत्येक में चिंतन के विशेष प्रकार पाये जाते हैं और चिन्तन का भिन्न एवं उच्चप्रकार ही एक अवस्था को दूसरी अवस्था से अलग व अंतर करता है। पियाजे के अनुसार केवल सूचनायें एकत्रण से बच्चा ऊपरी अवस्था में नहीं पहुँचता अपितु उसका प्रयोग, समस्या समाधान व तर्क देने में कितने बेहतर एवं गुणात्मक रूप से कर पाता है, यह निर्धारित करता है कि वह किस अवस्था में है।

=

Q(10) समीक्षा से आप क्या समझते हैं? समीक्षा का लेखन में क्या महत्व है?

Ans:- समीक्षा (Review) - समीक्षा से अभिप्राय आवश्यक सूचना को सम्मिलित करना तथा अनावश्यक को काटना है। प्रभावपूर्ण लेखन के लिए एक बार लेखन का पुनः निरीक्षण करते समय भाषा का पुनः निरीक्षण किया जाता है। समीक्षा में स्वयं द्वारा मूल्यांकन या अन्य व्यक्तियों की प्रतिपुष्टि के आधार पर ड्राफ्ट में परिवर्तन करना है। इस परिवर्तन में शब्दों को सम्मिलित करना, हटाना, प्रतिस्थापन तथा पुनः व्यवस्थित करना शामिल है। पुनः निरीक्षण केवल एक शब्द में या दस्तावेज के बड़े भाग में परिवर्तन करके किया जा सकता है। पुनः निरीक्षण प्रक्रिया में आपको संदेश के उद्देश्य तथा विषय-वस्तु उसके ढाँचे, भाव, वैकल्पिक शब्दों, व्याकरण विराम-चिन्हों तथा बनावट आदि की समीक्षा करनी चाहिए।

एक बार पहला ड्राफ्ट पूरा हो जाने पर यह जरूरी है कि उसकी समीक्षा की जाए या उसमें सुधार किया जाए। कई विशेषज्ञों का विचार है कि दस्तावेज को तीन बार पढ़ने की योजना बनानी चाहिए।

(1) पहली समीक्षा : विषय वस्तु और स्पष्टता (First Review - Content & Clarity)
विषय वस्तु की स्पष्टता पर ध्यान दें। ड्राफ्ट की पहली समीक्षा में निम्न बातों पर ध्यान दें-
(a) क्या आपका दस्तावेज संस्था तथा पढ़ने वाले की आवश्यकता को पूरा करता है?
(b) क्या आपने पढ़ने वालों को वे सब जानकारी उपलब्ध कराई है जिन्हें समझने तथा आपके मन्तव्यानुसार कार्य करने की उन्हें आवश्यकता है?
(c) क्या प्रासंगिक सूचना सही है?
(d) क्या प्रत्येक वाक्य स्पष्ट है? क्या संदेश परस्पर विरोधी वक्तव्यों से मुक्त है?
(e) क्या सामान्यीकरण के समर्थन में पर्याप्त सहायक तथ्य उपलब्ध है?

(2) दूसरी समीक्षा : व्यवस्था तथा खाका (Second Review - Organisation & Layout)
दूसरी समीक्षा में व्यवस्था तथा खाके पर ध्यान दें। इस पुनः निरीक्षण में मुख्य रूप से निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखें :-
(a) क्या संगठन का नमूना आपके उद्देश्यों, श्रोताओं तथा स्थिति के अनुरूप है?
(b) क्या पैराग्राफ के बीच विचारों का प्रभाव सहज है?
(c) क्या दस्तावेज का डिजाइन, पढ़ने वाले जैसी सूचना चाहते हैं उसे उपलब्ध कराने में सहायक होता है?
(d) खाके द्वारा जिन बातों पर बल दिया गया है, वह क्या जरूरी है?
(e) क्या आरंभिक व अंतिम पैराग्राफ प्रभावशाली है?

(3) तीसरी और अंतिम समीक्षा :- शैली और अभिव्यक्ति (Third Review - Style and Tone) - इस समीक्षा का संबंध मुख्य रूप से शैली और अभिव्यक्ति का पुनः निरीक्षण करने से है। तीसरे पुनः निरीक्षण में निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

(a) क्या संदेश पढ़ने में आसान है?

(b) क्या संदेश मैत्रीपूर्ण है तथा पक्षपाती भाषा से मुक्त है?

(c) क्या संदेश सद्भावना को बढ़ाएगा?